गांधीजी की कला साहित्य तथा संस्कृति के सम्बन्ध में विचार

श्री प्रेमसुख शर्मा
व्याख्याता–व्याकरण
श्री कल्याण राज्य आचार्य संस्कृत कॉलेज सीकर राजस्थान

शोध सारांश

गॉधीजी मात्र राजनीतिक, विचारक एवं समाज सुधारक ही नहीं थे, अपितु कला साहित्य तथा संस्कृति के मर्मज्ञ भी थे। यदि यह कहा जाय कि उनका सम्पूर्ण जीवन कलापूर्ण, साहित्यमय एवं संस्कृति - सम्पन्न थे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उनके अनुसार कला आत्ममंथन का प्रसाद है। उमसें अनन्त सौन्दर्य और जीवन कल्याण की भावना निहित है। महात्माजी के कला सम्बन्धी विचारों के कारण उनके प्रति जब अनेक प्रकार की भ्रांतियां फैलने लगी तो उन्हें अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहना पड़ा ''इस विषय में मेरे सम्बन्ध में गलतफहमी फैली हुई है। मैं कला के दो भेद करता हूं- आंतर और बाह्य। और उनमें से किस पर तुम अधिक जोर देते हो यही सवाल है। मेरे नजदीक तो बाह्य की कीमत तब तक कुछ नहीं है, जब तक अन्तर का विकास नहीं हो। समस्त कला अन्तर के आविर्भाव का विकास ही है। मनुष्य की आत्मा का जितना आविर्भाव बाह्य रूप में होता है उतना उसका मूल्य है। उनके इस कथन से स्पष्ट है कि वे अंतः विकास की अभिव्यक्ति को ही कला मानते हैं। इस दृष्टि से उन्होंने अपने जीवन को कलापूर्ण जीवन घोषित किया है। वे कला में आत्मदर्शन आवश्यकत समझते हैं। वे इस बात को स्वीकार करते है कि जनता के मनोरंजन एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए संगीतकला, कहानी, चित्रकला, नृत्य, नाटक, सिनेमा आदि आवश्यक है। किन्तु इन कलाओं के ऊपर उन्होंने नीति का नियन्त्रण आवश्यक माना है। सर्वोत्कृष्ट कला की कसोटी के सम्बन्ध में वे कहते है, ''सर्वोत्कृष्ट कला व्यक्ति भोग्य न होगी, सर्वभोग्य होगी और कला जब बाह्य अवलम्बनों से अधिक से अधिक मुक्त होगी तभी सर्वभोग्य बन सकेगी। इसलिए मैं बहुत मर्तबा यह कहता हूँ कि जो चन्द्र और ताराओं से प्रकाशित नभोमण्डल को देखकर जगतकर्ता की लाला में तल्लीन हो सकता है, उसे चित्रकार के दृश्यों से चित्रित नभोमण्डल और सूर्यास्त देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती वह तो प्रतिक्षण नये-नये रंग धारण करते हुए, नया सौन्दर्य प्राप्त करते हुए आकाश से ही सब कुछ प्राप्त कर लेगा।

जिस समय भारत में ''कला कला के लिए'' नारा बुलन्द था उस समय गॉधीजी ने यह घोषित किया कि कला की सार्थकता जीवन के निमित्त ही हो सकती है। उनकी दृष्टि से तो जीवन कला से श्रेष्ठ है। वे कहते है 'जीवन समस्त कलाओं'से श्रेष्ठ है। मैं तो समझता हूं कि जो अच्छी तरह जीना चाहता है वही सच्चा कलाकार है। उत्तर जीवन की भूमिका के बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है कला के मूल्य का आधार है जीवन को उन्नत बनाना। जीवन ही कला है। कला विश्व के प्रति जागृत होनी चाहिए - कला जीवन के प्रति जागृत होनी चाहिए। नीति, हितकारिता,

उपयोगिता आदि से विहिन कला का सम्बन्ध मात्र सौन्दर्य से होता है। अतः उसे उच्च कला का सम्मान नहीं दिया जा सकता। हीन वृत्तियों को उत्तेजित करने तथा भोग की इच्छा प्रदीप्त करने वाली कला अश्लील हैं। कला का लक्ष्य मनुष्य को आदर्शो की ओर अग्रसर करना, ऊँचा उठाना है। जब कलाकार अनिर्वचनीय सत्य को मूर्तिमान करता है तभी सच्ची कला का जन्म होता है। गॉधी विचारधाला के अनुसार प्रत्येक कला में कल्याणकारी तत्व अनिवार्य है। गॉधीजी ने कला को उसी अंश तक स्वीकार किया है जिस अंश तक वह कल्याणकारी है। मंगलकारी है। मन्दिरों और गुफाओं में चित्रित कलाकृतियों में महात्माजी ने उत्तम कला के दर्शन किए हैं। कला को वैभव की सीमा से निकालकर उसे जन-साधारण के लिए सुलभ बनाने का महत्वपूर्ण कार्य बापू ने किया है।

गॉधीजी की दृष्टि में जीवन सूर्य के समान है और कला, साहित्य दर्शन विज्ञान आदि उस सूर्य की अलग-अलग रंगीन किरणें है। महात्माजी उच्च कोटि के साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य किस प्रकार का हो, इस सम्बन्ध में कहकर नहीं दिखाया परन्तु स्वयं लिखकर प्रकट किया है। उन्होंने मध्ययुग के सन्तों की भॉति अपनी प्रांतीय भाषा गुजराती को सरल बनाया और उसे जनसाधारण की समझ के अनुकूल रूप प्रदान किया। यह उनकी गुजराती-साहित्य को एक महान देन है। उनकी दृष्टि में सच्चा साहित्य की भॉति समाजलक्षी होता है। जिस प्रकार कला में उपयोगिता को प्रधानता दी है उसी प्रकार साहित्य की कसौटी ने भी उसी सिद्धान्त को माना है। उनके अनुसार वास्तववाद (रियलिज्म) हैवानियत (एलिमलिज्म) है। किस प्रकार का साहित्य शाश्वत रह सकता है इस सम्बन्ध में वे कहते है वही काव्य और वही साहित्य चिरंजीवी रहेगा जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे, जिसे वे आसानी से पचा सकेंगे। कवि के सम्बन्ध में कहते है, हमारी अंतस्थ सुप्त संभावनाएं जागृत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। कवि जिस ग्रन्थ की रचना करता है उसके सब अर्थो की कल्पना नहीं कर लेता है। काव्य की यही खूबी है कि वह कवि से भी बढ़ जाता है। जिस सत्य का वह अपनी तन्मयता में उच्चारण करता है वही सत्य उसके जीवन में अवसर नहीं पाता। साहित्य और कवि के सम्बन्ध में प्रस्तुत किए गये थे विचार कितने महत्वपूर्ण है कहने की आवश्यकता नहीं। जनता की हीन वृत्तियों को उत्तेजित करने वाले अश्लील साहित्य और कला को वे किसी भी प्रकार से साहित्य और कला नहीं मानते थे। इस सम्बन्ध में उन्हीं के शब्दों में देखिये, 'कोई देश और कोई भाषा गन्दे साहित्य से मुक्त नहीं है। जब तक स्वार्थी और व्याभिचारी लोग दुनिया में रहेगें तब तक गन्दा साहित्य प्रकट करने वाले ओर पढ़ने वाले भी रहेगें। लेकिन जब ऐसे साहित्य का प्रचार प्रतिष्ठित माने जाने वाले अखबारों द्वारा होता है और उसका प्रचार कला या या सेवा के नाम पर किया जाता है तब वह भयंकर स्वरूप धारण करता है। वे चाहते थे कि भारत के प्रत्येक प्रान्त में अपनी मातृभाषा में संस्कारपूर्ण उत्तम साहित्य का सर्जन हो। वे साहित्य में नवीन प्रयोगों के पक्षपाती थे। शर्त इतनी ही थी कि वह साहित्य मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने में सफल होना चाहिए। उनके विचारानुसार साहित्य सुरूचिपूर्ण एवं सुन्दर होना चाहिए। भाषा सरल और शैली स्पष्ट होनी चाहिए। संक्षेप में वे साहित्य में कलाकार को कलापूर्ण रचना को महत्व देते है फोटोग्राफ के चित्र को नहीं।

भारतीय संस्कृति की गोरवमयी परम्परा के साक्षत रूप स्वयं गॉधी जी है। उन्होंने अनेक बाद इस ओर संकेत क्रिया कि हम अपनी संस्कृति का सम्मान करना सीधे, उसे आत्मसात करें। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि शेष दुनिया से

अलग रहकर अपने चारों ओर दीवार खडी करने के पक्षपाती थे। उनकी दृष्टि में यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि पहले अपनी संस्कृति को आत्मसात किया जाये और तत्पश्चात दूसरी संस्कृतियों के सम्बन्ध में विचार किया जाए। भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में कहते है मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि हमारी संस्कृति में जैसी मूल्यवान निधिया है वैसी किसी दूसरी संस्कृति में नहीं है। हमने उसे पहचाना नहीं है, हमें उसके अध्ययन का तिरस्कार करना, उसके गुणों की कीमत कम करना सिखाया गया है। मेरा धर्म मुझे आदेश देता है कि मैं अपनी संस्कृति को सीखू, ग्रहण करूं ओर उसके अनुसार चलू, अन्यथा अपनी संस्कृति से विच्छिन्न होकर हम एक समाज के रूप में मानो आत्महत्या कर लेंगे। स्पष्टतः गॉधीजी ने भारतीय संस्कृति के पुननिर्माण में अपूर्व सहयोग किया हैं।

संदर्भ सूची

1. गांधी जी का बयान या सत्याग्रही की मीमांसा
2. नीति धर्म अथवा धर्म नीति
3. सत्याग्रह कब, क्यों और कैसें ?
4. स्वदेशी और ग्रामोधोग
5. हिन्द स्वराज्य